Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 2 | Issue 3 | (July – Sep 2025)

आधुनिक कुमाउँनी कविताएँ : चिंतन के विविध आयाम

मुकेश कुमार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मोतीराम बाबूराम राजकीय स्ना० महाविद्यालय
हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड

शोधसार:-

विद्वानों का मानना है कि कुमाउँनी बोली में कविताएँ 18वीं शताब्दी से लिखी जानी प्रारम्भ हुई। कुमाउँनी कवियों ने अपनी कविताओं में प्रत्येक प्रकार के चिंतन को दर्शाया है। उन्होंने पलायन, महंगाई, बेरोजगारी, नारियों की स्थिति, पर्यावरण आदि की समस्या को अपनी कविताओं के माध्यम से व्यक्त किया है। पुराने समय में लोग आपस में मिलकर काम किया करते थे अब ऐसी स्थिति नहीं है। त्यौहारों के समय लोगों में पूर्व जैसा उल्लास देखने को नहीं मिलता है। जब से पहाड़ों में पलायन बढ़ा है यहाँ के लोगों के साथ-साथ पर्यावरण की दूर्दशा हो गई है। पुरुष शराब की लत के कारण अपना सारा धनधान्य और जीवन बर्बाद कर रहे हैं। कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से यहाँ के लोगों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है तथा बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित किया है।

मुख्य शब्द:- कुमाउँनी, चिंतन, कविता, पहाड़, आयाम

मूल आलेख:-

कुमाउँनी, भारोपीय भाषा परिवार के अन्तर्गत आने वाली पहाड़ी हिन्दी की एक बोली है। गोर्खा और अंग्रेजों के आगमन के बाद कुमाउँनी नवजागरण की भाषा बनी। इससे पहले कुमाउँनी केवल बोलचाल की भाषा थी। कुमाउँनी साहित्य के विकास में यहाँ के लोक-लोकसाहित्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। लोक रत्न पंत 'गुमानी' को कुमाउँनी का पहला तथा कृष्ण पांडे को दूसरा कवि माना जाता है, ये प्रारम्भिक युग (1800 से 1850 ई०) के कवि हुए। चिन्तामणी जोशी, नयनसुख पांडे, शिव दत्त शर्मा 'सती', दिवान सिंह, लीलाधर जोशी आदि पूर्व मध्ययुग (1850 से 1900 ई०) के माने जाते हैं। उत्तर मध्य युग (1900 से 1950 ई०) में गौरी दत्त पांडे 'गौर्दा', पं० शिरोमणी पाठक, लीलाधर उप्रेती, सुमित्रानन्दन पंत, पं० श्यामाचरण दत्त पंत, कविराज दत्त पंत, चन्द्रलाल चौधरी, मथुरा दत्त पांडे आदि कवि हुए। आधुनिक युग (1950 ई० अब तक) से कुमाउँनी में कविता लिखने के लिए अनेक लोग प्रेरित हुए। इस युग के कवियों में चारु चन्द्र पाण्डे, ब्रजेन्द्र लाल साह, नन्द कुमार उप्रेती, भानुराम सुकोटी, शेर सिंह बिष्ट 'अनपढ़', बंशीधर पाठक 'जिज्ञासु', देवकी महरा, गोपाल दत्त भट्ट, मथुरा दत्त मठपाल, हीरा सिंह राणा, गिरीश तिवाड़ी, दुर्गेश पंत, राजेन्द्र बोरा, जुगल किशोर पेटशाली, एम० डी० अण्डोला, डॉ० शेर सिंह बिष्ट, डॉ० देव सिंह पोखरिया, डॉ० प्रभा पंत आदि हुए।

कुमाउँनी कवि भारत में किसी भी स्थान पर निवास करते हों उन्होंने अपने पहाड़ को स्मृतियों में संजोए रखा है। वे अपने आस-पास के लोगों को अपनी कविताओं के माध्यम से पहाड़ के विषय में बताते रहते हैं। पहाड़ में अभी भी अधिकतर काम आपसी सहयोग से होते हैं। यहाँ के लोगों की बोली में अभी भी मिठास है तथा आदर-सम्मान यहाँ की सभ्यता का अभिन्न भाग है।

हिलि-मिली करनी सब बुति-धानि

बुलानी सब्बे मोहिली बाणी

आदर पानी याँ जोगि-जागियानि

सभ्यता याँ की जाणी-पछ्याणी

न दिखावा, ना ढ़ोंग

याँ म्यार गौं छु भागी

यां म्यार लोग।[1]

अर्थ:- अपना काम सब मिल बाँटकर करते हैं, सभी लोग मधुर वाणी बोलते हैं। यहाँ के स्वाभाव में आदर सम्मान है, सभ्यता यहाँ की जानी पहचानी है। यहाँ न दिखावा है नहीं ढ़ोग, यह मेरा गाँव है यहाँ के लोग मेरे अपने लोग हैं।

कवि का अपना दृष्टिकोण होता है किसी को पहाड़ सरल और सहज दिखता है। कोई पहाड़ की बर्बादी पर बहुत चिंतित है। खेती नष्ट होना, जानवरों का सड़कों में घूमना, भ्रष्टाचार तथा शराब का पहाड़ तक पहुँचना कुमाउँनी कवियों के लिए बहुत कष्ट विषय है। वे चिंता करते हैं कि पहाड़ में आपसी लड़ाई-झगड़ा बढ़ गया है, साथ-साथ दिखावा अधिक होने लगा है। गाँव के लोग अपनी संस्कृति को भूल गए हैं। तीज-त्यौहार, अतिथि-सत्कार व अन्य प्रथाओं में आए बदलाव से कवि का हृदय दु:खी है।

त्यार-ब्यार सब सकुनै तक रै गीं

पौण आब निपौण है गीं

सब बदई गो

गौं संस्कृति सब भूली गीं

आपण-आपण गौं में सब हरै गीं।[2]

अर्थ:- तीज-त्यौहार सब सगुन तक रह गए हैं। घरों में मेहमान अब बहुत कम आते हैं। सब बदल गया है, गाँव की संस्कृति सब भूल गए हैं गाँव में अपनापन कम हो गया है।

जो लोग साधन सम्पन्न हैं सारी सुख-सुविधाएँ उनके लिए हैं, वे अपनी सुविधानुसार जीवन यापन करते हैं। सड़क, अस्पताल सब कुछ अमीर लोगों के लिए है, पहाड़ में बसे गरीब के पास अभी भी कुछ नहीं है अपनी गरीबी के कारण ही वे पहाड़ में टिके हैं। शराब ने सारा पहाड़ खत्म कर दिया है। युवा बेरोजगारी से परेशान हैं, जिससे पहाड़ दिन-प्रतिदिन और अधिक गरीब होता जा रहा है।

दवाई जा्ग शराबक जहर

तदुकै ल्हिबेर बणिगो शहर

सड़क उनर लिजी, जनार पास कार छन

याँक मैंस आजि लग बेरोजगार छन।[3]

अर्थ:- दवाई के स्थान पर शराब रूपी जहर को बढ़ावा मिल रहा है, बस इसीलिए ही यह शहरीकरण है। सड़क उन लोगों के लिए है जिनके पास कार है, अन्यथा यहाँ तो लोग अभी भी बेरोजगार हैं।

उत्तराखण्ड निर्माण के पहले पहाड़ में विकास के नाम पर हो रहा बदलाव कुमाउँनी कविताओं का विषय रहा है। इस पर कवि बार-बार अपनी कविताओं के माध्यम से चिंता व्यक्त करते रहे हैं। पहाड़ में कठिन परिश्रम करने के बाद भी यहाँ के निवासियों को निराशा मिलती है। लोग रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा के लिए हमेशा से संघर्षरत हैं। कुमाउँनी कवियों ने पहाड़ की बदलती स्थिति को देखते हुए युवाओं का उत्साहवर्धन किया है।

काट्टी जाल तसीक लै-त्यर जीवनाक बाट।

आँखन में मिठ-मिठ-स्वैण सजै बेर हिट।।

रुढ़ियोंक जाल कणी-काटि-काटि ख्यड़।

नई पिढ़िक लिजी नई बाट बणै बेर हिट।।[4]

अर्थ:- आँखों में सुहावने सपने सजा के चल ऐसे ही तेरा जीवन भी कट जाएगा। पतझड़ को काटते हुए आगे बढ़ते रह, अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए आगे का रास्ता बनाते हुए निरन्तर सुपथ में चलते रह।

पहाड़ की पुरानी स्मृतियों के विषय में सोचते हुए अधिकतर कवि अपनी कविताओं के माध्यम से पलायन की पीड़ा व्यक्त करते हैं। कुछ कवियों का मानना है कि जो लोग किसी कारणवश पहाड़ से निकल गए उन्होंने पहाड़ सांस्कृतिक संरक्षण के लिए कोई विशेष कार्य नहीं किया। कवि इस प्रकार के लोगों पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि पहाड़ से पलायन कर चुके लोग अधिकतर स्वार्थी हो चुके हैं, उन्हें पहाड़ के अभावों और समस्याओं से कोई सरोकार नहीं है। उनके लिए पहाड़ी संस्कृति का मतलब दो दिन पहाड़ घूमना और पहाड़ का ठंडा पानी पीना है। कवि कहते हैं पहाड़ में रोजी-रोटी के सारे साधन समाप्त हो चुके हैं। यहाँ के लोग अनेक समस्याओं से जूझ रहे हैं और प्रवासियों को पहाड़ी गीत गाने में आनंद आ रहा है।

खाण हुँ दाणि नैं, पिण हुँ पाणि नैं

फिर लै मणि मैंस यास-यास लै छन

आइलै गीत गैणैं में छन-

“हाइ पहाड़ा जूँलो ठंडो पाणि प्यूँलो।[5]

अर्थ:- पहाड़ों में बेरोजगारी के कारण खाने को दाना नहीं, पीने को पानी नहीं फिर भी कुछ लोग ऐसे भी हैं जो गीत गा रहे हैं कि ‘पहाड़ जाउँगा, ठंडा पानी पियूंगा।

पुराने समय में लोग पहाड़ों में रहकर जीवनयापन करते थे, वे सीमित संसाधनों से ही स्वयं मेहनत कर अपनी आवश्यकताओं की सामाग्री जुटाते थे और अधिकतर संसाधनों की व्यवस्था अपने निवास के आस-पास ही करते थे। गाँवों से अधिकतर परिवारों के पलायन के बाद वहाँ निवास करने वालों की संख्या बहुत कम हो गई है। सुविधाओं के अभाव में रोजगार करने वाले लोगों के लिए संसाधन बहुत कम हैं। जिन गाँव में लोगों की संख्या बहुत होती थी वहाँ अब बहुत कम लोग आते-जाते हैं।

आज आँफर में-

उदासि छ, सुनसानी छ

न बगेटोंकि चड़-चड़

न हथौड़कि तड़-तड़

न पयाण हूँ धरी पा्ण पा्णि छ।[6]

अर्थ:- आज लोहार के कारखाने में उदासी है, सूनसानी है। न आग जलने का शोर है नहीं हथौड़े के चलने की अवाज है। उस खाली स्थान पर केवल लोहे के औजारों में धार लगाने में प्रयुक्त होने वाला पानी रखा है।

पहाड़ छोड़ चुके अधिकतर लोग यदि पहाड़ को याद भी करते हैं तो केवल अपने निजी स्वार्थ के लिए याद करते हैं, उन्होने पहाड़ इसलिए छोड़ा कि वहाँ सुखद जीवन के लिए मूलभूत सुविधाएं नहीं हैं। पहाड़ छोड़ने के बाद उनका मानना है कि पहाड़ में सब सरलता से उपलब्ध है। वे साल भर इस आस में रहते हैं कि कब पहाड़ जाए और वहाँ से बचा सामान ले आए। लोग देवता पूजने के बहाने पहाड़ जाते हैं और वहाँ की सम्पत्ति बेचकर तथा बचा सामान समेटकर अपने साथ ले आते हैं।

पुर्खनें जमीन जैजाद

बेचि गोछा

चार डबलनां लिजी

आपणिं पच्छयांण ले

मिटै गोछा

तुम ऐ गोछा

पहाड़![7]

अर्थ:- अपने पूर्वजों की जमीन-जायजाद बेच गए हो, कुछ रूपयों के लिए अपनी पहचान को मिटा गए और आज तुम फिर से पहाड़ आ गए हो।

पहाड़ छोड़कर जाने वाले लोगों के व्यवहार में बदलाव देखकर पहाड़ के कवियों का हृदय विचलित होता है। पलायन कर चुके लोगों को अपना व्यवहार न बदलने और अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए कवि लगातार उन्हें प्रेरित करते हैं। पहाड़ में रहने वाले लोग, पलायित लोगों में हुए बदलाव से निराश रहते हैं। वे बार-बार उन्हें पहाड़ में रहने का लाभ बताते रहते हैं। यहाँ के पर्यावरणीय आनंद को बताते हुए उनके स्वाभाव में आए बदलाव पर व्यंग्य करते हैं।

जब बै तु यौं बै गछै

आ्पणि बोलि लै भुलि गछै

सैपोंकि चारि गुगाट करछै

जरा-जरा सी बात में लै हकाहाक करछै।[8]

अर्थ:- जब से तुम यहाँ अर्थात पहाड़ से गए हो अपनी बोली-भाषा भी भूल गए हो। आपका व्यवहार सबके लिए बदल गया है थोड़ी-थोड़ी बात के लिए आप गुस्सा करते हो।

पहाड़ की दुर्दशा के जिम्मेदार पहाड़ के लोग स्वयं हैं। वे इस ग्लानि में रहते हैं कि हम पहाड़ में टिके हैं यह हमारा दुर्भाग्य है। पलायन कर चुके लोगों की तुलना स्वयं से करने के कारण वे कुछ भी नया नहीं सोच पाए। इसलिए यहाँ की घास, फूल-पत्तियाँ, जड़ी-बूटीयों का कोई उपयोग ही नहीं हो पाया और वे नष्ट हो गए। अब सारा पहाड़ एकदम बंजर हो गया है, यहाँ के भवन वीरान पड़े हैं साथ-साथ पहाड़ के खेतों की उर्वरता भी नष्ट हो गई है। यहाँ के निवासियों ने इसकी दशा सुधारने के लिए कोई विशिष्ट काम नहीं किया। अब स्थिति यह है कि पहाड़ केवल बंजर भूमि के पहरेदार के रूप में खड़े हैं।

मणी ले क्वे मे्रि सुणना,

मे्रि उज्याँण चाना-चितूना

मे्रि यो दा्स नि हुनि

भुला, मैं पहाड़ नैं,

पहरु है गयूँ

बा्जि कुड़िक पहरु।[9]

अर्थ:- पहाड़ अपने बारे में बात करते हुए कह रहा है कि यदि कोई मेरी बात थोड़ी भी सुनता या मेरी भूमि की देखभाल करता तो मेरी दुर्दशा नहीं होती। मेरे भाई अब मैं पहाड़ न होकर पहरेदार हो गया हूँ बंजर भूमि का पहरेदार!

पहाड़ी लोगों द्वारा पहाड़ छोड़ने का प्रमुख कारण रोजगार का अभाव है। यदि यहाँ रोजगार के पर्याप्त साधन होते तो युवा यहीं काम कर अपनी दिनचर्या के लिए धन कमाते, उन्हें बाहर जाने की आवश्यता नहीं पड़ती। अब जब अधिकतर लोग रोजगार के लिए शहरों में चले गए हैं तो उनके घर के आँगन में घास जम गई है। पहाड़ में युवाओं के पास पुराने समय से ही रोजगार का साधन फौज में भर्ती होना, कोई सरकारी नौकरी या पहाड़ से बाहर जाकर नौकरी करना है। पहाड़ी युवा बाहरी राज्यों से रुपया कमाकर अपने घर पैसा भेजते थे इसलिए कुमाऊँ की अर्थव्यवस्था को 'मनीआर्डर' प्रकार की अर्थव्यवस्था कहते थे। पहाड़ के युवा अपनी नौकरी के लिए पुस्तैनी जमीन छोड़कर दूसरे राज्य में जाते हैं या फिर फौज में भर्ती होते हैं। नौकरी के उद्देश्य से बाहरी राज्यों में काम करने गए लोग धीरे-धीरे पहाड़ छोड़ देते हैं। डॉ० प्रभा पंत अपनी कविता के माध्यम से कहती हैं कि यदि पहाड़ में नौकरी होती तो लोग यहीं रहकर जीवन यापन करते, यहाँ के घर मकान आबाद रहते, उनके चारों ओर घास नहीं जमतीं।

मिलनी जै नौकरी हमर पहाड़ में

किलै बा्सन स्याव, किलै जा्मन

भाङव-सिसूँण आज बा्ड़-कुड़िन में।[10]

अर्थ:- यदि हमारे पहाड़ में नौकर मिलती तो यहाँ लोमड़ियों का शोर नहीं सुनाई देता और नहीं यहाँ के मकानों के आगे भांग और सिसूण जमता।

शराब पहाड़ के लिए एक गम्भीर समस्या है, पहाड़ में पुरूष अपनी सारी कमाई का अधिकतर भाग शराब खरीदने में बर्बाद करते हैं। सीमित रोजगार से कमाया धन शराब खरीद कर नष्ट करने से परिवार में विवाद होता है।

शराब सेवन के बाद घरों में लड़ाई-झगड़े की घटनाएँ होती हैं। शराब के नशे में अनेक बार दुर्घटनाएँ भी होती हैं।

जो लै ड्राईवरैल सुर नि छाड़ि,

शराब पी बेर घुरयै दि गाड़ि।

बिन मौतै शराबल मौत आ गै,

भा्ल भलोंकि कुड़ि बाँ्जि है गै।[11]

अर्थ:- जिस किसी चालक ने शराब पीना नहीं छोड़ा, शराब पीकर वाहन चलाने से एक न एक दिन उसके वाहन की दुर्घटना होती है। शराब के कारण बिना मृत्यु के उसको मृत्यु आ जाती है और कई लोगों का परिवार नष्ट हो जाता है।

पुराने समय से ही पहाड़ के लोग सरल होते हैं। यहाँ बालिकाओं के लिए जीवन सहज था लेकिन अब समय बदल रहा है। यहाँ के लोगों की भावनाएँ बालिकाओं के प्रति बदल रहीं हैं, ऐसे में कविताओं के माध्यम से कवियों ने बालिकाओं को सतर्क रहकर, रास्ते में आ रही बाधाओं का मुकाबला करते हुए आगे बढ़ने के लिए कहा है।

कुणईं

बखत बदईणौ

तु धरिये अपन ध्यान

झन भुलिये

तु छै छ्योड़ीऽ

जुगन बै ख्ये्ड़ियैऽ

भली भै सराये खुट

कतुकै, कस्सै

बदइ जौ बखत

तु रौली छ्योड़ीऽ[12]

अर्थ:- कह रहे हैं समय बदल गया है, तू अपना ध्यान देना। भूलना नहीं कि तुम एक लड़की हो। घर से निकलते समय सोच-समझकर निकलना, भले ही समय कितना ही बदल जाए, तुम हमेशा एक लड़की हो और लड़की ही रहोगी।

पहाड़ के कवियों को प्रारम्भ से पर्यावरण की चिंता थी। वो अपने आस-पास के परिवेश की पर्यावरणीय चेतनाओं पर कविताएँ लिखते रहते थे। 'हमार गौं में बाग वाई रौ' कविता में कवि कहते हैं कि वनों के विनाश ने जंगली जानवरों को और अधिक हिंसक बना दिया। आज बहुदा देखने में मिलता है कि जंगली जानवर जंगल से निकलकर

आबादी और घरों की ओर आ रहे हैं। इस विषय में कवि दो दशक पहले ही अपनी कविता के माध्यम से चिंता व्यक्त कर चुके हैं और आज भी यह समस्या दिन प्रतिदिन अधिक गम्भीर होती जा रही है।

जगदीश जोशी ने अपनी कविता 'पेड़' के माध्यम से वृक्षों से जुड़े रहने की सलाह दी है। उन्होंने वृक्षों का उदाहरण देते हुए कहा कि हमें अपनी जड़ों से जुड़े रहना चाहिए, जैसे वृक्ष अपनी जड़ों से कट जाने के बाद सड़ जाता है, वैसे ही यदि मनुष्य अपनी जड़ों से कट गया तो वह भी समाप्त हो जाता है।

जब-जब पेड़ैकि जड़ काटी जैं

तब-तब किड़ पड़नी, रोग फैलनी।

सुकी लाकड़ आग भड़कूनी

पात-फव-फूल गइ जानी, सड़ि जानी

पेड़, पेड़ नी रै जान।

बास हरैं जैं

बस एक सड़ैन रै जैं।[13]

अर्थ:- जब-जब पहाड़ों की जड़ काटी जाती है, तब-तब कीटाणु उत्पन्न होते हैं और रोग फैलता है। सूखी लकड़ियों में आग लग जाती है। पत्ते, फल, फूल गल जाते हैं और वृक्ष सड़ जाते हैं। वृक्ष, वृक्ष नहीं रह जाते केवल दुर्गंध रह जाती है बस एक सड़ी दुर्गंध रह जाती है।

कुमाउँनी कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज को प्रभावित करने वाले प्रत्येक मुद्दे पर बात की है, उन्हें महंगाई की चिंता बीसवीं सदी के अन्तिम दशक से होने लगी थी। घर में आसानी से प्राप्त की जा सकने वाली वस्तुओं का बाजार में बिकना कवियों के लिए कष्टकारी था। उन्होंने मिट्टी का व्यापार बहुत दुर्भाग्यपूर्ण बताया। आज खाने-पीने की वस्तुऐं, साग-सब्जी, मशाले आदि सब कुछ महंगा हो गया है। लोग स्वयं काम न कर बनी-बनाई वस्तुओं को खरीद रहे हैं, इस विषय में उनकी चिंता आज और अधिक गम्भीर होती जा रहीं हैं।

यां-ग्यूं चड़ौव, साग-पात

आज है रैछ, एक्कै बात

इनौंन रोकि, हालौ सास

महंगाई जो, है गै खास।[14]

अर्थ:- यहाँ गेहूँ-चावल, साग-सब्जी सभी महंगे हैं। इस महंगाई ने मनुष्य की साँस रोक दी है। फिर भी यह महंगाई खास हो गई है दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

कुमाउँनी कवियों ने मजदूर वर्ग की लाचारी और शोषण की ओर भी ध्यान दिया। मजदूरों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर अनेक प्रकार के कानून तो बनते हैं पर उन नियमों का पालन सही प्रकार से नहीं होता है। मथुरा दत्त मठपाल जी कहते हैं कि मजदूरों के बारे में रचनाएँ होती हैं, उनके लिए आन्दोलन होते हैं और बड़े-बड़े मंच तैयार किए जाते हैं। वे इतने मेहनती होते हैं कि उनकी मेहनत की चर्चाएँ लंदन-टोकियो से लेकर व्हाइट हाउस

तक होती हैं। जब सारे संसार के लोग उनकी चिंता में मग्न होते हैं ठीक उसी समय वे भूखे पेट, तपती दोपहर में थकान से चूर शरीर के साथ काम कर रहे होते हैं।

और उ बखत हम-

भूकान पेट कैं धोति'ल लसकै,

पटाई कमर कैं ज्योड़'ल मसकै,

रुड़ी' घाम में हाड़-मास चसकै-

हांट-भांट टोड़नौं कई दूर।[15]

अर्थ:- उस समय (मजदूर) भूखे पेट धोती बाँधकर, थकी हारी कमर में सामान उठाने वाली रस्सी बाँधकर, दोपहर की तेज धूप में अपने शरीर को चमकाकर, घर से दूर परिश्रम कर रहा है।

लोगों के अनुचित व्यवहार पर कवियों ने अपनी बात रखी है। आधुनिक युग के मनुष्य की शान को खोटी बताते हुए वो कहते हैं कि कोई किसी की चिंता नहीं करता सब एक-दूसरे को लूटकर अपना पेट भर रहे हैं। गरीब व्यक्ति को हर प्रकार से प्रताड़ित कर चारों ओर उसकी उपेक्षा की जा रही है।

इथकै मनैईनो रोज पौ-परब

कैकैं के पड़नौ ऐल फरक

क्के नि चाँणय कैकि तरफ

खाँणई सब, है बेर निझरक।[16]

अर्थ:- इधर रोज तीज-त्यौहार मनाए जा रहे हैं। किसी को कोई चिंता नहीं है और कोई किसी की ओर नहीं देखता है। अन्य की चिंता किए बिना सब अपना पेट भर रहे हैं।

कुमाऊँ उत्तराखण्ड का एक मण्डल है। उत्तराखण्ड राज्य की स्थापना पहाड़ी क्षेत्र के विकास के लिए की गई थी। इस राज्य के बनने से पूर्व यहाँ के निवासियों का सोचना था कि पृथक राज्य बनने के बाद सीमित क्षेत्रफल वाले पहाड़ी राज्य में विकास की गति बढ़गी, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। इस राज्य के कवियों द्वारा विकास की चिंताओं पर ध्यान दिया गया, कविताओं के माध्यम से उन्होंने यहाँ के विकास की स्थिति पर अपने विचार व्यक्त किए। पृथक राज्य बनने के बाद भी मंहगाई, मिलावट, बेरोजगारी तथा घोटाले सब और अधिक बढ़ गए हैं।

ठुल घोट्ल वा्ल हर बार बेल में

ना्न-ना्नों कैं लगातार जेल है गो।

भल मैंसों लिजी, ज्यून रूण लै अझेल है गो।

किले कस बखत ऐ गो।[17]

अर्थ:- बड़ा घोटाला करने वाले हर बार बेल पर जेल से बाहर आ जाते हैं। जो सामान्य अपराध वाले कैदी हैं उन्हें सजा हो जाती है। यह कैसा समय आ गया है अच्छे लोगों का जीवन यापन करना बहुत कठिन हो गया है।

भ्रष्टाचार करने वालों के विरूद्ध नियम तो हैं परन्तु इससे घोटालों पर कोई असर नहीं है। सरकारी धन की बहुत अधिक मात्रा में लूट होती है, नोट की गड्डीयाँ इधर-उधर होती हैं और जाँचें कभी पूरी नहीं हो पाती हैं। गाँवों के लिए जो भी योजनाएँ बनी वे धरातल पर पूर्ण नहीं हो पाती हैं और इन घोटालों के विरूद्ध कार्यवाही करने वाला कोई जिम्मेदार व्यक्ति भी नहीं है।

खूब घोटा्ल घोट, के्क याँपन चाणी न्हाँ।

गौं लिजी बनी योजना, न मालूम हराणी काँ।[18]

अर्थ - अनेक घोटाले हो रहे हैं यहाँ कोई देख-रेख वाला नहीं है। गाँव के लिए बनाई जाने वाली योजनाएँ कभी पूरी नहीं हो पाती हैं।

अब पूरे देश के साथ इस प्रदेश में भी यही चलन है कि जब तक कोई नेता भ्रमण के लिए नहीं आता, तब तक कोई भी अधिकरी सड़क व अन्य विकास कार्यों की ओर ध्यान नहीं देता है। नेता जी के भ्रमण से पहले ही सड़कें सुधारी जाती हैं और विकास कार्य पूर्ण किए जाते हैं। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए कवि ने नेताओं से आग्रह किया है कि आप महीने-दो महीने के अन्तराल में हमारे क्षेत्र के भ्रमण पर आइएगा ताकि इसी बहाने विकास में गति आए और यहाँ की सड़कों का सुधारीकरण हो।

नेता ज्यू तुम म्हैंण द्वी म्हैंणम

हमार गौं-शहरम ऊँनै रयीं करो

सुणा्इ है जस्सै, पुजणीं छा

तुमा्र पुजण है पैल्यै पुरीं गईं

उ सड़का्क सबै घौ

जो बा्ट तुम ऊँणी छा।[19]

अर्थः- नेता जी आप एक-दो महीने में हमारे गाँव अथवा शहर में आते रहा कीजिए। जैसे ही सुनाई देता है कि आप आने वाले हैं आपके पहुँचने से पहले ही हमारे गाँव की सड़क ठीक कर दी जाती है। जिस रास्ते आप आने वाले होते हैं उस रास्ते के सारे घाव तुरन्त भर दिए जाते हैं।

कुमाऊँ में अनेक प्रकार के त्यौहार मनाए जाते हैं. अधिकतर त्यौहारों में लोगों की कुशलता और सद्बुद्धी की बात की जाती है फिर भी लोगों के भाव विचारों में कोई परिवर्तन नहीं आ रहा है। आमा बार-बार आशीष देती हैं कि अच्छा मनुष्य बनना लेकिन हमारा ध्यान गलत दिशाओं की ओर अधिक जा रहा है। कवि 'हरेला' कविता के माध्यम से कह रहे हैं कि मनुष्य में रुपए के एक आने के बराबर भी मानवता जीवित रहे तो वास्तविक हरेला माना जाएगा।

रुपैं में एक आ्न भरि

मैस्योव कैं लै-अगर ज्यून धरूँ

तो -

मैं सोचूँ-य धर्ति में

वी ह्वौल साँच हर्याव

साँच्ची ऽऽ

हरि-आल।[20]

अर्थ:- इस समाज में रूपए के एक आने के बराबर मानवता शेष बची हो तो मैं सोचूंगा कि इस धरती में वही सच्चा हरेला होगा और सही अर्थ में यहाँ हरि अर्थात भगवान आएँगे।

इस समय समाज में सहनशीलता का बहुत अभाव है लोग मानवता के नैतिक मूल्यों का पालन नहीं करते इस पर कवियों की संवेदना है कवि संसार को भय रहित, आदर्शवादी और संस्कारवान बनाना चाहते हैं। सूर्य-चन्द्र सब समय से आते-जाते हैं परन्तु पुष्पों में सुगन्ध नहीं है, बादलों में पानी नहीं है। वह कहता है कि बुरे काम बहुत हो गए अब अच्छाई की ओर लौटो। कवि उस दिन की प्रतीक्षा में है जब लोग एक-दूसरे को बराबर मानकर गले लगेंगे और आपसी सहयोग व भाईचारे को बढ़ाएँगे।

पर ओ दानव रूपी मानस

इंतजार छ त्यार लिजी

वी दिनक जब तू अङाव ह्ललै

मनुष्य कैं मनुष्य समझलै।[21]

अर्थ:- अरे दानव रूपी मानव मुझे प्रतीक्षा है उस दिन की जब तू मनुष्य को मनुष्य समझेगा और उसे गले लगाऐगा।

निष्कर्ष :-

कुमाउँनी कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से पहाड़ की समस्याओं के विषय में विस्तृत चिंतन किया है। महिलाओं के प्रति पहाड़ का दृष्टिकोण देखकर कवियों ने बालिकाओं को सतर्क रहने की सलाह दी। कवि पर्यावरण को बचाने का निवेदन भी करते हैं। कवियों ने महंगाई पर बात करते हुए मजदूर वर्ग के शोषण पर कविताएँ लिखी हैं। कुमाउँनी कवियों ने भ्रष्टाचार पर भी बात की, कवि कहते हैं कि बड़ा घोटाला करने वाले लोग बिना किसी सजा के घूम रहे हैं और छोटे अपराधियों को सजाएँ हो रहीं हैं। कुमाउँनी कवियों ने पहाड़ को युवाओं को सुपथ पर चलने के लिए प्रेरित किया। पलायन के कारण गाँवों में रहने वालों की संख्या बहुत कम है। लोगों ने पहाड़ का सारा सामान समेटकर शहर पहुँचा दिया है। पहाड़ केवल बंजर भूमि का पहरेदार बनकर रह गया है। कुमाउँनी कवि कहते हैं कि पहाड़ का विकास केवल नेताओं के भ्रमण पर निर्भर है। कवियों ने माना कि लोगों में मानवता का अभाव है, मनुष्य में मानवता का होना जरूरी है। कवि उस दिन की प्रतीक्षा है जब मनुष्य दूसरे मनुष्य के प्रति संवेदनशील हो जाएगा।

संदर्भ सूची:-

1. बंशीधर पाठक 'जिज्ञासु', सिसौंण, नन्दा प्रकाशन नैनीताल, पृ० 15
2. डॉ० मनोज उप्रेती, क्याप-क्याप, रंकबन्धु साहित्य अकादमी, फरीदाबाद हरियाणा पृ० 97
3. श्रीमती देवकी महरा, किरमाई तराण (स० - बालम सिंह जनोटी), शक्ति प्रकाशन अल्मोड़ा, पृ० 07
4. मोहम्मद अली 'अजनबी', किरमाई तराण (स० - बालम सिंह जनोटी), शक्ति प्रकाशन अल्मोड़ा, पृ० 25

5. जगदीश जोशी, जैङड़ी उज्याव, प्रकाश बुक डीपो बरेली, पृ० 66
6. हेमंत बिष्ट, किरमाई तराण (स० - बालम सिंह जनोटी), शक्ति प्रकाशन अल्मोड़ा, पृ० 110
7. ज्ञान पंत, बाटुई, पर्वतीय महापरिषद लखनऊ, पृ० 88
8. डॉ० कैलाश चन्द्र जोशी, किरमोई तराण (स० - बालम सिंह जनोटी), शक्ति प्रकाशन अल्मोड़ा, पृ० 103
9. राजेन्द्र बोरा, किरमोई तराण (स० - बालम सिंह जनोटी), शक्ति प्रकाशन अल्मोड़ा, पृ० 30
10. डॉ० प्रभा पंत, कुमाउँनी सहित्य-सुगंधिका, गोलज्यू पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स अल्मोड़ा, पृ० 13
11. जुगल किशोर पेटशाली, किरमोई तराण (स० - बालम सिंह जनोटी), शक्ति प्रकाशन अल्मोड़ा, पृ० 33
12. नवीन जोशी 'नवेन्दु', उघड़ी आंखोंक स्वींण, जगदम्बा कम्प्यूटर्स एण्ड ग्राफिक्स हल्द्वानी, पृ० 119
13. जगदीश जोशी, जैङड़ी उज्जाव, प्रकाश बुक डीपो, बरेली, पृ० 78
14. नारायण सिंह बिष्ट, द्वै (असीक), लता स्नेह प्रकाशन हल्द्वानी, पृ० 16
15. मथुरा दत्त मठपाल, आड़्-आड़् चिचैल है गो, राम गंगा प्रकाशन रामनगर, पृ० 17
16. दामोदर जोशी 'देवांशु' किरमोई तराण (स० - बालम सिंह जनोटी), शक्ति प्रकाशन अल्मोड़ा, पृ० 47
17. डॉ० रमेंश चन्द्र पाण्डेय 'राजन', किरमोई तराण (स० - बालम सिंह जनोटी), शक्ति प्रकाशन अल्मोड़ा, पृ० 88
18. गणेश पाण्डेय, किरमोई तराण (स० - बालम सिंह जनोटी), शक्ति प्रकाशन अल्मोड़ा, पृ० 125
19. डॉ० प्रभा पंत, कुमाउँनी साहित्य-सुगन्धिका, गोलज्यू पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स अल्मोड़ा, पृ० 14
20. दीपचन्द्र सिंह कार्की "दीपक", किरमोई तराण (स० - बालम सिंह जनोटी), शक्ति प्रकाशन अल्मोड़ा, पृ० 111
21. विपिन चन्द्र जोशी 'कोमल', किरमोई तराण (स० - बालम सिंह जनोटी), शक्ति प्रकाशन अल्मोड़ा, पृ० 111